बाइबल टीचर

वर्ष 17 अक्टूबर 2020 अंक 11

सम्पादकीय

अपने मसीही भाई के पास जाकर उससे बातचीत कर

कई मसीही भाईयों में आपस में मनमुटाव हो जाता है। इसका कोई भी कारण हो सकता है। शायद कोई वाद-विवाद या आपस में भेदभाव। क्योंकि हम मनुष्य है इसलिये ऐसा होना स्वाभिक है। इसका कारण कई बार यह भी हो सकता है कि हम अक्सर भूल जाते है कि हम मसीही है और हमें किस प्रकार के लोग होना चाहिए। बाइबल शिक्षा देती है कि हमें मसीह जैसा स्वाभाव रखना चाहिए। यीशु मसीह का स्वभाव कैसा था? उसका स्वभाव बहुत नम्र था। (फिलि. 2:5)। प्रत्येक मसीही को नम्रता का पाठ सीखना चाहिए। यीशु ने कहा था, ''धन्य है वे जो नम्र है, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।'' (मत्ती 5:5)। यीशु ने कहा था कि उसके लोगो को बच्चों के समान होना चाहिए, जो मासूम होते हैं। उसने कहा था कि, ''यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। (मत्ती 18:3-4)। बच्चे लड़ते हैं लेकिन थोड़ी देर में ठीक हो जाते है।

हम पाप रहित तो नहीं हो सकते क्योंकि हम मनुष्य है परन्तु हम अपने को पाप से बचा सकते हैं। यदि हम ज्योति में चलते रहेगें तो पाप से हमारा बचाव होता रहेगा, क्योंकि यीशु का लोहू हमें धोता रहता है। (1 यूहन्ना 1:7)।

अब कई बार कुछ लोग कलीसिया में अपने गलत व्यवहार से समस्या के कारण बन जाते है। कुछ लोग होते हैं जो गलतियां करने के बाद भी अपने को बदलना नहीं चाहते। एक बार पतरस ने भी गलती की थी जिसके लिये प्रेरित पोलुस को उसे समझाना पड़ा। गलतियो 2:11 में लिखा है ''पर जब केफा यानी पतरस अनंताकिया में आया तो मैंने उसके मुंह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था'' पैलुस ने एक बार एक भाई के बारे में कहा था कि सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराईयां की है परन्तु प्रभु उसके कामों के अनुसार उसे बदला देगा। (2 तीमु. 4:14)। फिर वह तीमुथियुस से कहता है कि ''तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया है।'' (पद 15)।

कलीसिया को ऐसे भाईयों के साथ क्या करना चाहिए जो इधर-उधर जाकर भाईयों की बुराई करते है? बाइबल इसके विषय में क्या कहती है? जो लोग

कलीसिया के विरूद्ध पाप करते हैं उनके साथ हमें क्या करना चाहिए? हमें देखना चाहिए कि यदि किसी भाई के साथ कलीसिया में कोई समस्या खड़ी हो जाये तो यह प्रयत्न करना चाहिए कि समस्या का समाधान प्रेम और बातचीत से हल हो जाये। आइये देखें बाइबल इसके विषय में क्या कहती है? पौलुस कुरिन्थ में कलीसिया से कहता है कि ''तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं, क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे गुंधे हुए आटे को खमीरा कर देता है। पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो; कि नया गुंधा हुआ आटा बन जाओ, ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। सो आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावे न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से (1 कुरि. 5:6-7)। कई बार कोई भाई गलती करता है तो हम उसे क्षमा नहीं करना चाहते है, यह बात सही नहीं है। इसके विषय में पौलुस ने कहा था, ''इसलिये इससे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो, और शांति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। इस कारण मैं तुमसे विनती करता हूं कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो।'' (2 कुरि. 2:7-8)। हमें अपने मसीही भाईयों के प्रति प्रेम दिखाकर उन्हें क्षमा करना है।

यदि हमें कलीसिया में लगता है कि कोई गलत कर रहा है तो क्या हम सब जगहों पर जाकर अन्य लोगों में उसकी बुराई करे? नहीं ऐसा नहीं होना चाहिए। यदि कोई समस्या की बात है या किसी भाई या मसीही बहन से हमारा कोई विवाद या गलतफहमी है तो बाइबल कहती है, अपने भाई के पास जा और उससे बातचीत कर। यीशु ने शिक्षा देकर कहा था, ''यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया और यदि वह न सुने तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो तीन गवाहों के मुंह पर ठहराई जाए। यदि वह उनकी भी न मानें, तो कलीसिया से कह दे, यदि कोई भाई भटक गया है तो हमारा कर्तव्य है कि उसे वापस लायें (याकूब 5:20)। परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न मानें तो तू उसे अन्य जाति और महसूल लेने वाले के जैसा मान। यहां हम देखते हैं कि यीशु ने किसी नाराज भाई को समझाने और उसे वापस लाने का तरीका बताया है। यीशु ने कहा था जब वह भाई या बहन किसी की बात नहीं मान रहा है तो उसे उसके हाल पर छोड़ दो।

जो भाई किसी भी बात से यदि नाराज हो जाते है तो उन्हें कभी भी दूसरो से कलीसिया की बुराई नहीं करनी चाहिए क्योंकि कलीसिया मसीह की देह है और यदि हम कलीसिया की बुराई करेगें तो इससे कलीसिया को जो मसीह की देह है चोट पहुंचेगी।

यीशु की बात को हमेशा याद रखिये जब उसने कहा था और वह आपसे भी कह रहा है, कि ''इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो, क्योंकि व्यवस्था और भविष्यदूक्ताओ की शिक्षा यही है। (मत्ती 7:12) आप चाहते है कि लोग आपके साथ अच्छा व्यवहार करे इसीलिये आपको भी ऐसा करना चाहिए।

मृत्यु तथा पुनःरुत्थान

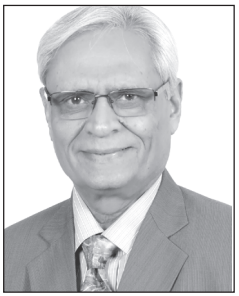

सनी डेविड

संसार में अनेकों ऐसी बातें है जिन्हें हम स्वीकार नहीं करते। अनेकों ऐसी बातें है जिन्हें मानने से हम इंकार करते हैं। जैसे कि कहा जाता है, मनुष्य जाति का आदि संबंध पशुओं से है; या मृत्यु के पश्चात मनुष्य का अस्तीत्व समाप्त हो जाता है। इस प्रकार की बातें वास्तव में स्वीकार करने योग्य नहीं है। परन्तु कुछ बातें ऐसी भी है जिनसे इंकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे सच्चाई है। हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि एक परमेश्वर है, क्योंकि परमेश्वर के अस्तीत्व के प्रमाण अनेक है। सारी सृष्टि इस बात की ओर संकेत करती है कि परमेश्वर है। यदि सृष्टि है तो सृष्टि का रचने वाला भी अवश्य है। यदि एक नमूना है तो नमूने का बनाने वाला भी अवश्य है। आपका घर अपने आप ही बनकर खड़ा नहीं हो गया, परन्तु उसे किसी ने बनाया है। मान लीजिये, आपके घर में दीवार पर टंगी फोटो को देखकर कोई कहे कि इस चित्र का कोई बनाने वाला नहीं है, तो आप इस बात को मानने से इंकार करेंगे, क्योंकि आप जानते हैं कि वह चित्र किसी ने अवश्य ही बनाया है। आपके घर वा उस चित्र के बनाए जाने का प्रमाण वास्तव में इस में नहीं है कि आपने उनके बनाने वालों को स्वयं देखा हो, परन्तु वह घर और वह चित्र स्वयं ही इस बात का प्रमाण है कि उनका कोई अवश्य ही बनाने वाला है। जब मैं परमेश्वर की अद्‌भुत सृष्टि को अपनी खुली आंखों से देखता हूं, तो मैं पवित्र बाइबल के लेखक के साथ यह कहने पर बाध्य हो जाता हूं कि आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। (भजन 19:1)। सो मैं परमेश्वर का इंकार नहीं कर सकता।

इसी प्रकार, हम मृत्यु का भी इंकार नहीं कर सकते। यह एक सच्चाई है। हम प्रतिदिन लोगों को मरते हुए देखते हैं। हम सब जानते हैं कि आज पृथ्वी पर जितने भी प्राणी जीवित हैं, एक न एक दिन वे अवश्य ही मरेंगे। कोई भी मनुष्य यहनहीं कह सकता कि वह कभी नहीं मरेगा, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से नियुक्त एक सच्चाई है। परमेश्वर का वचन कहता है, ''मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।'' (इब्रानियों 9:27)।

और इसी तरह से, पुनःरुत्थान का भी इंकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि जिस तरह से यह सच है कि मनुष्य आज जीवित है, और एक दिन वह अवश्य ही मरेगा, उसी प्रकार यह भी वैसे ही सच है कि एक दिन सब मनुष्य जी उठेंगे। इस विषय में सबसे महत्पूर्ण प्रमाण जो यहां दिया जा सकता है, वह है स्वयं प्रभु यीशु मसीह का पुनःरुत्थान। न केवल यीशु मारा और गाड़ा ही गया, परन्तु अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद फिर से जी भी उठा। यह घटना किसी कान में नहीं घटी, परन्तु जिस प्रकार लोगों ने उसे सूली पर चढ़ते हुए और मृत्यु के बाद कब्र में दफ़न

देखा, वैसे ही उसकी मृत्यु के तीन दिन के बाद लोगों ने उसे फिर से जीवित देखा। उन्होंने उसके जी उठने की गवाही दी और खुलकर इस सच्चाई का प्रचार किया। यहां तक कि उन में से बहुतेरों ने अपनी इस गवाही के कारण अपने प्राणों तक को बलिदान कर दिया।

हम देखते हैं कि यीशु के चेलों ने जब उसका सुसमाचार प्रचार करना आरंभ किया, तो सबसे पहिले उन्होंने लोगों के सामने इसी सच्चाई को पेश किया। उन्होंने बताया कि यीशु ने उनके बीच में रहकर बड़े-बड़े काम किए परन्तु, उसी को जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बंधनों से छुड़ाकर जिलाया, क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।'' (प्रेरितों 2:23, 24)। यहां उन्होंने लोगों को कुछ भविष्द्वाणियों का भी स्मरण दिलाकर कहा, कि ये बातें ठीक वैसे ही पूरी हुई है जैसे कि पहिले कहा गया था, कि मसीह मारा जाएगा, गाड़ा जाएगा और फिर जी उठेगा।

यीशु के चेलों ने सबसे पहिले उन्हीं लोगों के बीच में इस गवाही को दिया जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में भाग लिया था। उन से उन्होंने कहा, तुम ने उस पवित्र और धर्मी का इंकार किया, और बिनती की, कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए। और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, और इस बात के हम गवाह है। (प्रेरितों 3:14, 15)। और निःसंदेह, उनमें से हजारों इन बातों को सुनकर अपने मनों में शोकित हो उठे, उन्होंने उसमें विश्वास किया और अपने पाप से मन फिराया और उसकी आज्ञानुसार अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया, और सबसे पहिले वही मसीह की मंडलों में मिलाए गए। (प्रेरितों 2 तथा 3)।

यीशु के मरे हुओं में से जी उठने की गवाही देने के कारण उनमें से अनेकों जेलखानों में डाले गए। स्तिफनुस को पत्थरवाह करके मार डाला गया। (प्रेरित 7)। याकूब को तलवार से मार डाला गया। (प्रेरितों 12) परन्तु उपद्रव के साथ-साथ यीशु के पुनः रुत्थान का प्रचार और भी जोर से फैलने लगा। हज़ारों लोग यीशु की आज्ञाओं को मानकर उसकी कलीसिया में शामिल होने लगे, और उसकी इस प्रतिज्ञा की बाट जोहने लगे कि एक दिन वह अवश्य ही उन्हें लेने वापस आएगा। वे जानते थे कि इस आशा के साथ चाहे उनकी मृत्यु भी क्यों न हो जाए परन्तु उसके आने पर वे अपने उद्धारकर्ता ही की तरह फिर से जी उठेंगे। वे इसी आशा के साथ जीते थे और इसी आशा में मरते थे।

सो यीशु का एक बड़ा ही प्रसिद्ध चेला, अपनी एक पत्री में मसीह यीशु की मंडली को एक जगह लिखकर कहता है, हे भाईयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुमने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है... कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा। और कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया।

फिर पांच सौ से भी अधिक भाईयों को एक साथ दिखाई दिया.... सो जबकि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्योंकर कहते है, कि मरे हुओं का पुन:रुत्थान है ही नहीं? यदि मरे हुओं का पुन:रुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है। (1 कुरिन्थियों 15)। यहां पर कुछ ऐसे लोग थे जो मरे हुओं के पुन:रुत्थान पर संदेह करने लगे थे, वे सोचते थे कि शायद यह काम असंभव है। परन्तु प्रेरित उन्हें कहता है, कि ऐसा सोचकर वे उसी टहनी को काट रहे है जिस पर वे स्वयं बैठे हैं, क्योंकि वह उन्हें याद दिलाना चाहता है, कि आरंभ में जिस बात को उन्होंने ग्रहण किया था और जिस में वे स्थिर थे और जिसके द्वारा उनका उद्धार होता है, वह यही सुसमाचार है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया और जी उठा। और जबकि मसीह वास्तव में मुर्दों में से जी उठा, तो यह कहना क्योंकर उचित है कि पुन:रुत्थान है ही नहीं? सो इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण कि मुर्दे अवश्य ही जी उठेंगे, प्रेरित इस तर्क के द्वारा प्रमाण देता है, कि यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा, और जो सो गए हैं उन में पहिला फल हुआ, तो मुर्दों का जी उठना कोई अचंभे की बात नहीं है।

इसी विषय पर एक दूसरे प्रश्न का जवाब देकर वह कहता है, अब कोई यह कहेगा कि मुर्दे किस रीति से जी उठते है, और कैसी देह के साथ आते है? हे निर्बद्धि जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होने वाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसको देह देता है; और हर एक बीज का उस की विशेष देह.. मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है... क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। (1 कुरिन्थियों 15)।

पाप मृत्यु को उत्पन्न करता है, परन्तु यीशु ने क्रूस पर पाप को नाश कर दिया, और मुर्दों में से जी उठकर मृत्यु को सदा के लिये हरा दिया। और इसलिये, यीशु के द्वारा मनुष्य पाप से छूटकर अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है। प्रभु यीशु ने कहा पुन:रुत्थान और जीवन मै ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। (यूहन्ना 11:25, 26)। उसने कहा जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है अनन्त जीवन उसका है, और उस पर

दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। (यूहन्ना 5:24)।

मित्रो, एक दिन प्रभु यीशु अपनी अप्रतिज्ञानुसार अवश्य ही वापस आएगा। वह दिन न्याय का दिन होगा; वह दिन एक बड़े पुनःरुत्थान का दिन होगा, उस दिन सब जी उठेंगे और यीशु ने कहा, जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुतथान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:29)। क्या आप उस महान दिन का सामना करने के लिये अपने आप को अभी से तैयार करना न चाहेंगे? परमेश्वर आप की सहायता करे जबकि आप उसके वचन पर चलने का निश्चय करते हैं।

यीशु का सुसमाचार

जे. सी. चोट

अपने इस अध्ययन में हम यीशु के सुसमाचार के विषय में देखेंगे। हमारे लिये सुसमाचार को जानना बहुत आवश्यक है। क्योंकि इसके द्वारा हमारा उद्धार होता है। बाइबल की या नये नियम की पहली चार पुस्तकों को सुसमाचार की पुस्तकें कहा जाता है। मत्ती, मरकुस लूका और यूहन्ना की पुस्तक हमें एक सुसमाचार के विषय में बताती है और वो है यीशु का सुसमाचार। यह सुसमाचार यह है कि यीशु इस संसार में आया और उसने संसार के लोगों के पापों के लिये अपने प्राणों को दिया, वह कब्र में गाड़ा गया परन्तु तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा और फिर स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस चला गया। सुसमाचार का अर्थ है खुशखबरी या शुभसंदेश।

सुसमाचार को समझने के लिये आपको यह समझना होगा कि मनुष्य अपने पापों में खोया हुआ था। वह परमेश्वर के बिना किसी आशा के था। तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस पापी संसार में भेजा। इस पापी संसार में उसने अपने पुत्र को एक स्त्री द्वारा जन्म देकर भेजा ताकि वह मनुष्य का रूप धारण करे और मनुष्य के बीच में रहकर बिना पाप के कलवरी के क्रूस पर मारा जाए। वह मारा तो गया परन्तु मृतकों में से जी उठा। वह फिर से वापस आयेगा। आज पूरे संसार के लिये यह बड़ी खुशी की खबर है कि यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, गाड़ा गया और जी उठा और आज वह हमारा जीवता प्रभु है जिसने हमें अनन्त जीवन की आशा दी है।

प्रेरित पौलुस अपनी पत्री में लिखते हुए कहता है, ''हे भाईयो मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुमने अंगीकार भी किया है और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया स्मरण रखते हो. नहीं तो तुम्हारा विश्वास

करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने अब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया। और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)। यह शुभ संदेश यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने पर आधारित है। यदि यीशु का जी उठना नहीं होता तो हमारे पास सुसमाचार नहीं होता।

सुसमाचार मनुष्य के लिये एक आशा की किरण है। पूरे संसार के लिये सुसमाचार एक आशा का संदेश है। अपने चेलों को यीशु ने यह आज्ञा दी थी, कि वह इस सुसमाचार को सारे संसार में ले जाये (मत्ती 28:18, 19 तथा मरकुस 16:15-16)। लूका ने इसके विषय में कहा था, ''फिर उसने उनसे कहा ये वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमसे कहीं थी, कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्य दूक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी है, वे सब पूरी हो। तब उसने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उन की समझ खोल दी। और उसने कहा, यो लिखा है कि मसीह दुख उठायेगा और तीसरे दिन मरे हुओ में से जी उठेगा और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो।'' (लूका 24:44-48)।

आप देखेगें कि प्रेरितों को जब सुसमाचार फैलाने की आज्ञा दी गई थी तो उसने उन्हें साफ तरीके से यह बता दिया था कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसे दिया गया है। (मत्ती 28)। उसने उन्हें बड़े अधिकार से यह बात कही थी क्योंकि वह क्रूस पर मारा गया था कब्र में गाड़ा गया था और तीसरे दिन जी उठा था। उसने बड़े अधिकार से उन्हें कहा था कि जाओ और सुसमाचार का प्रचार करो। वह चाहता था कि उसके लोग इस खबर को हर स्थान पर पहुंचायेंगे तथा वह चाहता था कि लोग जाकर बताये कि उन्हें विश्वास करना, मन फिराना तथा अंगीकार करके बपतिस्मा लेना है। सुसमाचार को इन्हीं आज्ञाओं के द्वारा माना जाता है। इन आज्ञाओं में सुसमाचार शामिल है। सुसमाचार को सुनना आवश्यक है क्योंकि विश्वास सुनने से आता है (रोमियों 10:17)।

बहुत से बाइबल के पद इस आवश्यकता को बताते हैं कि सुसमाचार सुनना, और मानना कितना आवश्यक है, विश्वास करना भी बड़ा जरूरी है क्योंकि बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (इब्रानियों 11:6)। यीशु ने बपतिस्मे की आवश्यकता को भी बताया था जैसे कि प्रेरित पौलुस बताता है कि बपतिस्मे के द्वारा हम यीशु की मृत्यु की समानता में आ जाते है (रोमियो 6:3-4)। क्या आप सुसमाचार पर विश्वास करते है? यदि हां तो आज ही अपने पापों को धो डालने के लिये बपतिस्मा लें (प्रेरितों 22:16)।

मेरा व्यक्तिगत जीवन और एक मसीही के रूप में बढ़ना

बैटी बर्टन चोट

परिचय: मुझे अपनी किसी भी गतिविधि तथा एक मसीही स्त्री के रूप में पड़ने वाले प्रभाव को देखने से पहले, परमेश्वर के परिवार में एक व्यक्ति तथा एक आत्मा के रूप में बढ़ने को देखना आवश्यक है।

1. बहुत सी डिनोमिनेशनों के लोगों में भ्रमित विश्वास पाया जाता है कि नवजात शिशु में जन्म से ही आदम और हव्वा के पाप का दाग होता है।

1. यदि हम वचन पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि यह विश्वास फीसदी गलत है।

(क) देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा (भजन 51:5)। इस हवाले का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए किया जाता है कि लोगों को जन्म से ही पापी माना जाता है, पर यह नहीं कहता है कि नवजात दाऊद पापी था। बल्कि यह कहता है कि उसकी मां, जो अधर्म के संसार में रह रही थी एक वयस्क थी और पापी थी।

(ख) यीशु ने कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना मत करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है" (मत्ती 19:14)।

(ग) लोगों को निमंत्रण दिया जाता है, कि हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, (मत्ती 11:28, 29)। नवजात शिशु और छोटे बच्चे मसीह के पास आने या जिम्मेदारी का उसका जुआ उठाने या अपने आप उससे सीखने को चुन नहीं सकते है।

2. यदि हमारा जनम पाप के साथ नहीं हुआ है तो फिर हम परमेश्वर की नजर में पापी कब बनते हैं?

1. हम पापी तब बनते हैं जब हम में यह जानने की समझ आ जाती है, कि सही क्या है और गलत क्या है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है (याकूब 1:14, 15)।

2. हम पाप तब करते हैं जब हम सही को करने से इंकार कर देते हैं इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है (याकूब 4:17)। मसीही लोग गलत करने के बजाय उन्हें दिए गए परमेश्वर के काम को करना नकारने के द्वारा पाप करते हैं।

3. एक पापी के रूप में क्या मैं इतनी अच्छी हो सकती हूं कि मेरे अच्छे कर्म इतने अधिक हो जाएं कि मेरा उद्धार हो सके?

1. जवाबदेही की उम्र वाले सब लोगों ने पाप किया है (रोमियों 3:23)। पूरी बाइबल में कोई ऐसा हवाला नहीं है जो इस विचार का समर्थन करता हो कि पापी मनुष्य अपने आपको शुद्ध कर सकता है। ऐसा कोई हवाला नहीं है कि जो यह

सुझाव देता कि कोई शुभ कर्म किसी बुरे काम से अधिक होने पर उसे रद्द कर सकता है।

2. उत्पत्ति 3:15 में दी गई प्रतिज्ञा से, कि स्त्री की संतान (मसीह) ने शैतान को कुचलना था, परमेश्वर के वचन का संदेश यह है कि मनुष्य की एकमात्र आशा बलि के निष्कलंक मेमने, हमारे प्रभु का शुद्ध करने वाला लहू है। अपने पापों को मिटाने के लिए, हमारे लिए उसके लहू में धोए जाना आवश्यक है। "क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे?... परन्तु प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे (1 कुरिन्थियों 6:9, 11) यीशु मसीह.. हमसे प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है (प्रकाशितवाक्य 1:5)।

4. उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?

1. सुसमाचार को सुनो (रोमियों 10:17)।

2. विश्वास करो कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (मरकुस 16:15, 16)।

3. अपने पापों से मन फिराओ (लूका 13:3; प्रेरितों 2:38)।

4. मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में मानने के अपने विश्वास का अंगीकार करो (मत्ती 10:32; प्रेरितों 8:37)।

5. पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लो (दफनाए जाओ) (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3, 4)।

5. अब मसीह के लहू में नया धुलने पर, मैं परमेश्वर की नजर में मैं कैसा दिखता हूं?

नये जन्में हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ (1 पतरस 2:2)।

2. नये मसीहियों के रूप में हमारी जिम्मेदारी बढ़कर सयाने होना है। तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहण योग्य है (1 पतरस 2:5)।

3. क्या अब हम पापी नहीं रहे? यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते, पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

यदि हम कहें, कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हम में नहीं है (1 यूहन्ना 1:6-10)।

6. मेरा नया पिता मेरे साथ क्या क्या करता है?

1. कि यदि हम उसकी आज्ञा को मानते हैं तो परमेश्वर का प्रेम हम में सिद्ध होता है पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध

हुआ है हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें है (1 यूहन्ना 2:5)।

2. वह हमें वह बोझ नहीं उठाने देगा जो हमारे लिए सहना कठिन हो। वह उसमें हमारी सामर्थ और हमारी चुनौतियों को नाप लेता है। तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको (1 कुरिन्थियों 10:13)।

3. कि वह हम पर अपनी आशिषें उण्डेलेगा और धर्मी पर बहुत से आशीर्वाद होते हैं (नीतिवचन 10:6)।

4. कि हर प्रार्थना का उत्तर मिलेगा, परन्तु उसके अनुसार जो उसे हमारे लिए बेहतर लगता है न कि हमारी सीमित मानवीय समझ और दृष्टि के अनुसार। मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा (मत्ती 7:7, 8)।

5. कि यदि हम विश्वासी रहें, तो हमें किसी न किसी प्रकार का सताव सहना होगा। जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे (2 तीमुथियुस 3:12)।

6. यदि हम आज्ञाकार हैं तो हमारा भाई हमारी ओर से पिता के सामने विनती करता है। हे मेरे बालकों मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्राश्यचित है, और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी (1 यूहन्ना 2:1, 2)।

कौन है जो दण्ड की आज्ञा देता है? मसीह ही है जो मर गया वरन मृतकों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है (रोमियों 8:34)।

7. यह कि अंत में जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8:28)।

7. मुझे आत्मिक रूप में बढ़ने के लिए किन औजारों का इस्तेमाल किया जाता है?

1. उसके द्वारा हमें दिए गए लिखित पत्र बाइबल के द्वारा उसके मन की बात को समझकर। परमेश्वर की सोच को जानने का हमारे पास वास्तव में एक ही तरीका है कि उसके वचन को पढ़ें उसका अध्ययन करें और उसे याद करें और अपने मनों में रखें।

2. उसका परिवार अर्थात साथी मसीही जो हमारे बढ़ने में सहायता कर सकते हैं।

3. प्रार्थनाओं के उत्तर

4. हमारी सामर्थ को बढ़ाने की चुनौती।

8. किन तरीकों से मैं अपने पिता जैसा बन सकता हूं?

1. अपनी शारीरिक दिखावट में। उस जोर को देखें जो संसार शारीरिक देखभाल और कपड़ों पर देता है। क्या हम संसार के पीछे चलते हैं, या हम विनम्र

होकर हर प्रकार से भक्ति की झलक देने की कोशिश कर रहे हैं?

(क) चेहरे के हाव भाव

(ख) लिबास

(ग) चीजें

2. मानसिक रूप में केवल मनुष्य को ही परमेश्वर के वचनों को पढ़ने की योग्यता दी गई है ताकि हम मानसिक रूप में उसके स्वरूप में बढ़ सकें। हमें अपने मनों तथा सोच को उसके अनुसार जो हम उसकी सोच अर्थात उसके प्रेम के बारे में पवित्र शास्त्र में से पढ़ते हैं, ढालना आवश्यक है।

(क) सही तरतीब जो सारी सृष्टि में दिखाई देता है, और जिस ढंग से सब चीजों को मिलकर काम करने के लिए बनाया गया है।

(ख) लड़ाइयां, झगड़े और फसाद पूरी तरह से मानवीय सोच के लिए बिल्कुल विनाशकारी है, इस बात का सबूत हैं कि परमेश्वर की मूल योजना पूरी शांति और सदभावना के लिए थी।

(ग) धार्मिकता से हमें पाप रहित बनाया गया था, और आज भी नवजात और छोटे बच्चे पाप रहित ही होते हैं (सारी मनुष्यजाति के लिए मूल योजना के अनुसार) जब तक उन्हें भले और बुरे, सही और गलत जो चाहे चुन सकने की समझ नहीं आ जाती। पूरी तरह से धर्मी होना परमेश्वर के स्वभाव में ही है, और जब उद्धार पाए हुए लोग उस नये स्वर्ग और पृथ्वी के अपने घर के वारिस होंगे तो वहां पर कोई पाप नहीं होगा।

3. भावनात्मक रूप में। जब पवित्र शास्त्र को ध्यान से पढ़ते हैं, तो हमें पता चलता है कि मनुष्य के अंदर पाई जाने वाली हर भावना परमेश्वर के अंदर भी पाई जाती है। एक बड़ा अंतर यह है कि आम तौर पर भावनाओं से पापपूर्ण आधार बन जाते हैं जबकि परमेश्वर की भावनाएं उसकी भलाई और धार्मिकता के कारण होती है।

(क) क्रोध यिर्मयाह 21:5

(ख) हंसी भजन 37:13

(ग) सुख भजन 35:27, 1 यूहन्ना 3:22

(घ) थकान यशायाह 43:24

(ड़) ईर्ष्या व्यवस्थाविवरण 32:21, 1 कुरिन्थियों 10:22

(च) घृणा जकर्याह 8:17

(छ) खुशी भजन 37:23, 24

(झ) प्रेम 1 यूहन्ना 3

(ण) करूणा यिर्मयाह 12:15

(ट) भद्रता यशायाह 40:11

(ठ) दया भजन 103:13

(ड) हमदर्दी भजन 103:17

(ढ) आनन्द करना सपन्याह 3:17

(थ) गाने के साथ आनन्द सपन्याह 3:17

4. सामाजिक तौर पर

(क) मसीही लोगों को सन्यासी होने की आवश्यकता नहीं है जिन्होंने अपने आपको अपने पास के लोगों से अलग कर लिया हो। हमें अपने संसार को सुधारने

के लिए जो कुछ भी हम कर सकते हैं, वह करते हुए, स्नेहपूर्ण और सहायक संबंध बनाते हुए लाभकारी सांसारिक संगठनों का भाग बनना आवश्यक हैं

(ख) संस्कृति को कपड़ों, मनोरंजन तथा अन्य सांसारिक नजरिये के देखने के बजाय हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हमारा नमूना परमेश्वर के लिए सकारात्मक हो।

(ग) हमें अपने आस पास के लोगों के साथ सुसमाचार को बांटने के मौके बनाना आवश्यक हैं

5. आत्मिक रूप में

(क) एक ओर जहां हमारी शारीरिक देहों से परमेश्वर के प्रति हमारे आत्मिक समर्पण का पता चलना आवश्यक है, वहीं हमारी आत्मा अविनाशी है, जिसमें एक ऐसा खालीपन है जिसे केवल परमेश्वर के साथ गहरे संबंध से ही भरा जा सकता है।

(ख) आत्मा के साथ काम करते हुए हमारा मन हमें सही और गलत से खबरदार रखता है, हमारे विवेक को हमारे द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानने या न मानने के बारे में बताता रहता है। हमें अपने मन को परमेश्वर के वचन के ज्ञान के द्वारा ट्रेन करना आवश्यक है ताकि हम परमेश्वर के सामने हमेशा शुद्ध विवेक के साथ जी सकें।

(ग) केवल आत्मिक सच्चाईयों को जानना ही काफी नहीं है बल्कि यह भी आवश्यक है कि वे हमारी सोच और हर पहलू को आकार दें। हमारे लिए जीवन के हर आत्मिक चलन में चलना आवश्यक है।

परन्तु एक अंतिम विचार किया जाना आवश्यक है। हमारे प्रभु के स्वर्ग में लौट जाने से पहले, उसने क्या किया? "यीशु ने उनके पास आकार कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:18-20)।

जिस लक्ष्य को पाने के लिए वह आरंभ से काम कर रहा था, वह पापी मनुष्य के उस तक बहाली का मार्ग था। यह काम केवल लोगों द्वारा सुसमाचार को सुनकर उसे मानने से ही हो सकता है, ताकि वे परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में उसकी संतान बन सकें। आवश्यक अगुआई के लिए उसने नया नियम दे दिया है, पर संसार तक संदेश को पहुंचाने का वास्तविक कार्य मनुष्य के हाथों में दिया गया है।

इस पर विचार करें परमेश्वर का अबदी कार्य अर्थात उद्धार का अनन्त दान, हमारे हाथों में रखा गया। हम इसका क्या करें? क्या हम उदासीन होकर इसे खामोशी से दबाए रखें, अपने साथ ही इस संदेश को मरने दें, या खोए हुए संसार में परमेश्वर की आवाज बन जाएं?

कहानी बताई जाती है जिसमें स्वर्गदूत यीशु के मानवीय देह में जन्म लेने उसकी सुनने वालो को उन्हें सिखाने के उसके काम को, देख रहे थे। उसकी मौत पर वे डर से सहम गए और फिर उसके कब्र में से जी उठने पर विजय का आनन्द मनाने लगे। जय जयकार। जब वह स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया और अपने

सिंहासन पर जा बैठा तो वे उत्सुकता से उसकी ओर बढ़ें।

अब हमें पता चला कि आप इतने समय से क्या कर रहे थे। वे पुकार उठे। चलो चलकर संसार को बताते हैं कि आप उन्हें बचाने के लिए मर गए।

नहीं यीशु ने उत्तर दिया यह तुम्हारा काम नहीं है।

तो फिर यह किसका काम है? वे हैरान होकर पूछने लगे।

मैंने अपने चेलों को सौंप दिया है।

क्या कहा??? क्या आपने वह अबदी कार्य मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया? वे अविश्वासी होकर पूछने लगे।

हां यीशु ने उत्तर दिया।

पर प्रभु स्वर्गदूतों ने एतराज जताते हुए कहा आप मनुष्यों पर भरोसा नहीं कर सकते। संसार में पाप आदम और हव्वा लेकर आए थे। यहूदा ने आपके साथ विश्वासघात किया था। यहां तक कि शमौन पतरस ने भी आपका इनकार किया और आप ने सब कुछ उसी के हाथों में, और उन मनुष्यों के हाथों में आने वाले युगों तक दे दिया।

हां प्रभु ने उत्तर दिया।

पर निश्चय ही यदि वे नहीं कर पाए तो निश्चय ही आपके पास कोई और योजना होगी।

नहीं मेरी कोई और योजना नहीं है।

उस खजाने की जो हमें सौंपा गया है, हम इच्छा करें।

आराधना स्तुति या फिर प्रदर्शन

जिम्मी जिविडन

सच्ची आराधना लोगों को लुभाने के लिए प्रदर्शन नहीं बल्कि परमेश्वर की महिमा के लिए उसकी स्तुति है। लगता है कि बहुत से लोग इस सच्चाई को भूल गए हैं। कलीसियाएं दिखावें, संगीतमय प्रदर्शनों तथा नाटकीय प्रस्तुतियों में एक दूसरे से बढ़कर दिखाने की कोशिश करती हैं। ऐसा लगता है कि उनका इरादा परमेश्वर की महिमा करना नहीं बल्कि लोगों को रिझाने का होता है। आराधना में शोर शराबा, उछलना कूदना वचन के अनुसार बिल्कुल गलत है।

परमेश्वर ईंट पत्थरों के बनाए हुए मंदिरों में नहीं रहता है। उसकी आराधना मानवीय प्रदर्शनों के द्वारा नहीं होती है। वे चाहे कितने भी सुन्दर, नाटकीय या उत्तेजित करने वाले क्यों न हो। जीवता परमेश्वर, परमेश्वर है। वह शारीरिक प्रदर्शन नहीं बल्कि आत्मिक आराधना को चाहता है। आराधना मनुष्य को रिझाने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर को दिखाने के लिए होनी चाहिए। परमेश्वर मनुष्य के हाथ के बनाए हुए मंदिरों में नहीं रहता, और न ही मनुष्य के हाथों से सेवा करवाता है जैसे कि उसको किसी चीज की कमी हो, क्योंकि वह तो खुद भी सब को जीवन और श्वास और सब चीजें देता है (प्रेरितों 17:24, 25)। सच्ची आराधना रटी रटाई

बातें बोलना, परम्परागत रस्म या किसी संगीतमय प्रदर्शन को सुनना या किसी कलाकार की नाटकीय प्रस्तुति को देखना नहीं है। ये सब बातें संवेदनशील हैं। उनका उद्देश्य संवेदनाओं को उभारना होता है। वे मनुष्य के भावनात्मक स्वभाव का ध्यान आकर्षित करती हैं। ऐसी गतिविधियां मनुष्य को दिखाने के लिए हैं, न कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए।

सच्ची आराधना में भीतरी मनुष्य यानी तैयार आत्मा का, मन का जिसे समझ हो, और हृदय का जो महसूस करता हो, शामिल होना आवश्यक है। मनुष्य की नई खोज या उत्तेजना की जगह इसे इस्तेमाल किया जा सकता है यीशु ने कहा था, "जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये आराधनालयों में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके" (मत्ती 6:5)।

आराधना

जैरी बेट्स

मसीही व्यक्ति के लिए चंदा देना फर्ज के साथ-साथ एक बड़ी आशा भी है। बेशक देने का सबसे बड़ा उदाहरण हमारे लिए क्रूस पर यीशु का मरना है। मरकुस 12:41-44 में हमें मनुश्य के देने का शायद सबसे बड़ा उदाहरण मिलता है। यीशु लोगों को मन्दिर के खजाने में पैसे डालते हुए देख रहा था। तभी एक विधवा आई और उसने दो दमड़ियां डाल दीं, जो कि उस समय का सबसे छोटा सिक्का था। बेशक आज की करंसी में उसकी सही सही राशि अलग होगी पर मैं यह कहना चाहता हूं कि यह सिक्का लगभग न के बराबर होगा। फिर भी यीशु ने कहा कि इस विधवा ने उन सबसे बढ़कर दिया था क्योंकि उन्होंने अपनी बहुतायत में से दिया था पर इसने जो कुछ इसके पास था वह सब दे दिया था।

चंदा देने के कारण

परमेश्वर की दृष्टि में कारण का महत्व सबसे बढ़कर होता हैं। यह देखते हैं कि चंदा देने के कुछ गलत कारण क्या हैं? देना केवल फर्ज समझकर या प्रतिष्ठा पाने या लोगों से प्रशंसा पाने या इस सोच से राहत पाने के लिए नहीं होना चाहिए कि जो काम मैं खुद नहीं कर सकता वह पैसा दे कर करवा लूं। कुछ पैसे दे देना काम करने की आवश्यकता को कम नहीं कर देगा। अपनी जगह परमेश्वर की सेवा करने के लिए किसी दूसरे को भाड़े पर नहीं लिया जा सकता। देना मुख्यतया मसीही व्यक्ति के विश्वास प्रेम और परमेश्वर के प्रति समर्पण का एक कार्य है। अपने देने से हम परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को दिखाते हैं। जितना हम देते हैं उतना ही हमारी उन्नति भी होती है। उदार बनकर हम ईश्वरीय स्वभाव के साझी बन जाते हैं। देना हमारे लिए परमेश्वर की आशीष का मार्ग भी खोल देता हैं।

आखिर में कलीसिया के लिए परमेश्वर के राज्य के लिए उन्नति के लिए देना आवश्यक है। कलीसिया की कई जरूरतों के लिए पैसा जरूरी नहीं होता और अपने बच्चों के लिए परमेश्वर की योजना यही है कि वे राज्य को सपोर्ट करें।

1 कुरिन्थियों 16:1-2

अब हम चंदे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए किया जाता है, जैसी आज्ञा मैं ने गलातिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहलेदिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।

इन आयतों में हमें देने या कुछ अलग रख छोड़ने की आज्ञा मिलती है। हमें सप्ताह के पहले दिन, जब कलीसिया इकट्ठा होती थी, ऐसा करने की आज्ञा दी गई है जो इस बात का संकेत है कि अलग रख छोड़ना कलीसिया को दिया जाने वाला चंदा था न कि उसे घर में ही रख देना। यदि अलग रख छोड़ना घर में होता तो यह किसी भी समय हो सकता था, जिसमें कलीसिया के साथ इकट्ठा होने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

यह एक निजी आज्ञा थी कि केवल धनवानों बूढ़े लोगों, जिनके ऊपर कम कर्ज हो आदि लोगों को ही नहीं बल्कि हर किसी को इसमें योगदान देना चाहिए।

हमें अलग से रखना आवश्यक है। आम तौर पर हम इसे धन ही समझते हैं परन्तु इसमें और भी चीजें हो सकती हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि किसी के पास क्या रखने को है। किसी के पास पैसे थोड़े होने का अर्थ यह नहीं है कि वह दे नहीं सकता। बाइबल यह कभी नहीं कहती है कि केवल पैसे ही दिए जाने चाहिए या दिए जा सकते हैं।

हमें अपनी आमदनी के अनुसार देना आवश्यक है। परमेश्वर हम से यह नहीं कहता है कि हम एक निश्चित राशि दें। यहूदियों को अपनी आमदनी का दसवां भाग देने की आज्ञा दी गई थी, परन्तु अलग-अलग प्रकार के बलिदानों तथा अन्य बातों पर ध्यान करें तो वे वासतव में इससे कहीं बढ़कर देते थे। जबकि हमें एक उत्तम वाचा और उत्तम उद्धारकर्ता मिला है, तो क्या हमें उनसे कम देना चाहिए? यहां मुख्य बात यह है कि हम अपनी तुलना दूसरों से नहीं कर सकते। देना एक व्यक्तिगत मामला है इसलिए हमें उन लोगों के साथ, जो हो सकता है कि जो हम से बहुत कम दे रहे हो, अपनी तुलना करके अपने आपको सही ठहराने की कोशिश से बचना चाहिए।

यह सुरक्षात्मक था। उन्हें चंदा इक्ट्ठा करना आवश्यक था ताकि पौलुस के आने पर इकट्ठा न करना पड़े। यह पौलुस के थोड़ी देर बाद कुरिन्थुस में आने की बात थी। उन्हें पौलुस के आने पर उसके लिए पहले से चंदा तैयार रखना था। यह इस बात को दिखाता है कि हमारे पास उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जो पड़ सकती है पैसा होना आवश्यक है। यह नहीं कि जब हमें आवश्यकता पड़े, हम तभी चंदा इक्ट्ठा करें।

2 कुरिन्थियों 9:5-7

इसलिए मैं ने भाइयों से यह विनती करना आवश्यक समझा कि वे पहिले से तुम्हारे पास जाएं, और तुम्हारी उदारता का फल जिस के विषय में पहले से वचन दिया गया था, तैयार कर रखें कि यह दबाव से नहीं परन्तु उदारता के फल की नाई तैयार हो। परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।

हमें आनन्द से और स्वेच्छा से देना आवश्यक है। यदि हम यह सोचकर देते हैं कि हमें देना आवश्यक है तो परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता। हम प्रेम के कारण देते हैं न कि इसलिए कि देना मजबूरी है। देना कभी भी मुसीबत या बेबसी से नहीं होना चाहिए। कुछ कलीसियाएं अपने सदस्यों से प्रण लेकर उन से जबर्दस्ती करने का प्रयास करती है और यदि वे नहीं देते तो वे उन पर जुर्माना लगाती है। ऐसा कर देने के आनन्द को छीनकर इसी एक मजबूरी बना देता है।

जैसे हम ने मन में ठाना है वैसे हमें देना आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि हम यह सोच समझकर पहले से निर्णय लेते हैं कि हम क्या देंगे। हम पहले परमेश्वर को देने और फिर बाकी को अपने लिए खर्च करने का फैसला करते हैं न कि यह कि जो रविववार के दिन हमारे पास बचा हो वह परमेश्वर को देंगे।

यह वचन हमें देने की प्रेरणा भी देता है। देना मजबूरी क्यों नहीं होना चाहिए? उसका एक मुख्य कारण यह है कि क्योंकि परमेश्वर ने हमें जितना हम उसे देते हैं उससे कहीं बढ़कर आशीष देने का वायदा किया है। हमें मन में लालच रखकर नहीं देना चाहिए यानी यह सोचकर नहीं देना कि हमें इससे और अधिक मिलेगा। तोभी परमेश्वर ने हमसे वायदा किया है कि जिस प्रकार हम उसे देते हैं उसी प्रकार वह हमें आशीष देगा। कुछ लोग खास कर टीवी पर प्रचार करने वाले लोगों को और अधिक पाने की लालसा दिलाकर इस वचन का दुरुपयोग करते हैं। वे लोगों को उन्हें पैसा भेजने को कह सकते हैं जिससे जल्द ही उनकी मनोकामना पूरी हो जाए। यह वचन के बाहर होने के साथ साथ गलत इरादे की ओर भी ध्यान दिलाता है। 2 कुरिन्थियों 9:8 में याद दिलाता है कि परमेश्वर हमें आशीष देगा ताकि हम उसका काम भले कामों के लिए कर सकें न कि इसलिए हम अपनी सुख सुविधा के लिए इसका इस्तेमाल करें।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दान कितना बड़ा है। क्योंकि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं (2 कुरिन्थियों 8:12)। अन्य शब्दों में परमेश्वर केवल यह नहीं देखता कि किसी का दान कितना बड़ा है। यह इस बात को समझा देता है कि हम अपने दानों की तुलना एक दूसरे से नहीं कर सकते। परमेश्वर किसी की योग्यता के अनुसार ही निर्णय करता है और यह तय करने की योग्यता केवल परमेश्वर में है।

देने के परिणाम

देने का एक स्पष्ट परिणाम तो यह है कि कलीसिया की आवश्यकताएं पूरी होती हैं। बाइबल में हमें पैसा इक्टठा करने के विभिन्न तरीकों या कलीसिया के विभिन्न कार्यों को चलाने के लिए पैसा इक्ट्ठा करने का कोई अधिकार नहीं मिलता। न ही कलीसिया को गैर सदस्यों से चंदा मांगना चाहिए, जैसा कि आज के अधिकतर टीवी कार्यक्रमों में होता है। कलीसिया का काम कलीसिया के सदस्यों के प्रयासों से चलना चाहिए।

देने से धन्यवाद होता है और परमेश्वर को महिमा मिलती है। परमेश्वर की अपनी सेवकाई को पूरा करने से दूसरे लोग हमारी सेवकाई को देखकर हमारे परमेश्वर की आज्ञा मानने के कारण परमेश्वर की महिमा करते हैं। मत्ती 5:16 में हम यीशु को इस पर बात करते हुए देखते हैं। तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बढ़ाई करें।

देने से कलीसिया और हमारी आत्मिक रूप में उन्नति होती है। जब हम वैसे देते हैं जैसे दे सकते हैं तो कलीसिया के पास अपने काम को करने के लिए फंड होने लगते हैं। जिससे बहुत सी जगहों पर खोई हुई आत्माओं के मन परिवर्तन का मार्ग खुलता है। जिस कलीसिया में कोई काम नहीं हो रहा उसका भाग कोई नहीं बनना चाहेगा। कलीसिया जब काम करती हैं तो परमेश्वर को महिमा मिलती है, और लोग ऐसी कलीसिया का भाग भी बनना चाहेंगे जहां अच्छे काम हो रहे हों।

विवाह और घर के लिये परमेश्वर की योजना ईश्वरीय लक्ष्यों को ठहराने से

कोय रोपर

विवाह होने पर आप दोनों के सामने "हम मिलकर आगे जीवन में क्या करना चाहते है?" अक्सर यह सवाल आता है। चाहे आपने यह निर्णय ले लिया हो कि विवाह के लिए आपका लक्ष्य किसी भी बात से बढ़कर परमेश्वर को भाने और स्वर्ग में जाने का है, आपके सामने सवाल फिर रहेंगे। "हम प्रभु की सेवा बेहतरीन ढंग से कैसे कर सकते हैं?" हम कैसा काम करेंगे?, अपने व्यक्तिगत कारोबार में हम ठहराव करने की उम्मीद करते हैं। आपको लम्बी अवधि की योजनाएं बनानी पड़ेंगी, जैसे यह कि आप कहां रहेंगे, भूमि के छोटे से टुकड़े पर खेती करेंगे या नहीं, या कोई कारोबार करेंगे, और बुढ़ापे में आप क्या करेंगे? आप यह निर्णय कैसे लेंगे? आप अपने विवाह के लिए लक्ष्य कैसे निर्धारित कर सकते हैं?

लक्ष्य ठहराने की आवश्यकता को समझें

लक्ष्य ठहराने की आवश्यकता को समझ लें। किसी ने कहा है, यदि आप किसी बात पर निशाना नहीं लगाते, तो यह लग ही जाएगा।" मसीही दम्पत्ति का अंतिम लक्ष्य

परमेश्वर की सेवा करना और स्वर्ग में जाना ही है और हर लक्ष्य बदल सकता है पर आप मिलकर जीवन में क्या पाना चाहते हैं और भविष्य को कैसे देखते हैं। एच. नॉरमन राइट ने कहा है।

लक्ष्यों से आपके जीवन को दिशा मिलती है, वे आने वाले समय के लिए हो सकती है। इसलिए वे आपको वर्तमान की कई कठिनाइयों से उभार सकते हैं। आपका ध्यान आने वाली साकारात्मक आशाओं पर हो सकता है। लक्ष्यों से आपके समय को और प्रभावशाली बोध से इस्तेमाल करने में सहायता मिलेगी, क्योंकि वे आपको यह चुनने में सहायता करते हैं कि कौन सी बात महत्वपूर्ण है और कौन सी नहीं है।

जीवन में लक्ष्य लेकर चलने वाला व्यक्ति उस लक्ष्य को पाने के लिए देर तक कठिन परिश्रम करने को तैयार रहता है। उदाहरण के लिए स्कूल में पढ़ाने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति पूरा समय काम करने को टालता है और डिग्री पाने के लिए देर तक भलाई करने के योग्य होने के लिए पढ़ाई में अधिक समय देता है।

अपने जीवन के हर क्षेत्र के लिए लक्ष्यों का होना

मिलकर अपने जीवन के हर क्षेत्र के लिए लक्ष्य ठहराने पर विचार करें। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्य ठहराकर आप अच्छा करेंगे।

(1) आपका आत्मिक जीवन। आप मसीह और कलीसिया के लिए मिलकर क्या पाना चाहते हैं।

(2) आपका व्यक्गित जीवन, आप परमेश्वर द्वारा दिए तोड़ों या योग्यताओं और रूचियों को कैसे बढ़ा सकते हैं?

(3) आपका वैवाहिक जीवन। आप भविष्य में किस प्रकार का विवाह पाना चाहते हैं?

(4) आपकी शिक्षा। आप अपने लिए कैसी शिक्षा चाहते हैं और आपको कैसी शिक्षा की आवश्यकता है? आप अपने बच्चों के लिए शिक्षा के क्या लक्ष्य ठहराते हैं?

(5) आपका काम या कारोबार, आप अपने काम में क्या प्राप्त करते हैं?

(6) आपका समाज, नागरिक और राजनैतिक, आप जिस समाज में रहते हैं उसके लिए आप क्या करना चाहते हैं? आप कैसा संबंध बनाना चाहते हैं?

लम्बी अवधि और कम अवधि के लक्ष्य बनाएं

लक्ष्य लम्बी अवधि के भी होते हैं और छोटी अवधि के भी। आपका अंतिम लक्ष्य यीशु की सेवा करना परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना ओर स्वर्ग में जाना होना चाहिए। उस लक्ष्य के अलावा (और उसके साथ), आपको इस जीवन के लिए लम्बी अवधि के कुछ लक्ष्य रखने चाहिए। जैसे यह कि आप अपने काम में क्या प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं, आप कई साल बाद अपने विवाह को कैसा बनाना चाहते हैं, और एक बुजुर्ग दम्पत्ति के रूप में आप क्या करेंगे। फिर आपको अपने लम्बी अवधि के लक्ष्यों को पाने में सहायता के लिए छोटी अवधि के लक्ष्य भी ठहराने की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए यदि लम्बी अवधि का लक्ष्य खुशहाल देर तक चलने वाला वैवाहिक जीवन, तो छोटी अवधि के आपके लक्ष्यों में हर साल विवाह पर कई पुस्तकें या लेख पढ़ना और अपने दोनों के लिए अलग से समय निकालना हो सकता है।

एक-दूसरे को संतुष्ट करने वाली लक्ष्य ठहराने वाली प्रक्रिया बनाएं

लक्ष्य ठहराने वाली और निर्णय लेने वाली प्रभावी प्रक्रिया का इस्तेमाल करें। आपके लक्ष्यों और निर्णयों से आप दोनों प्रभावित होंगे। इसलिए आपको किसी ऐसे प्रबंध पर सहमत होना चाहिए, जो दोनों को संतुष्ट करता है।

निर्णय लेने में पति और पत्नी की भूमिका

निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्रमुखता किसे मिलनी चाहिए? बाइबल के दृष्टिकोण से चाहे पति घर का मुखिया है (देखें इफिसियों 5:22-24), पर उसे परिवार को प्रभावित करने वाले बड़े निर्णय अपनी पत्नी से विचार करने के बाद ही लेने चाहिए। मसीही पति को वही करना चाहिए जो उसे लगता है कि उसकी पत्नी के लिए बढ़िया है।

परन्तु व्यवहार में यह नियम कुछ जटिल हो जाता हैं मसीही विवाह प्रत्येक का एक दूसरे को समर्पित होना है परन्तु अन्ततः निर्णय लेने की जिम्मेदारी पति की है। उसे यह निर्णय अपनी पत्नी की इच्छाओं और आवश्यकताओं का ध्यान में रखते हुए लेना चाहिए। उसके साथ उसे परमेश्वर के भय में अपने परिवार के लिए अगुवाई देने और उपाय करने के योग्य होने के लिए जो भी आवश्यक हो, करना चाहिए। समय के साथ, उसके लिए, विवाह के लिए और परिवार के लिए जो भी अच्छा हो उसे पाने के लिए वह छोटी अवधि के अपने लक्ष्य बनाएं, चाहे वे पत्नी की इच्छाओं से मेल न खाते हो।

पत्नी के लक्ष्यों की समस्या

अपने पति को सम्पर्ण करते हुए मसीही पत्नी को कई बार अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों में निराशा मिलती है। किसी स्त्री की सहायता कैसे की जा सकती है, जो परमेश्वर को भाती हो और उसे और उसके पति दोनों को संतुष्ट करती हो?

(1) वह अपनी इच्छाओं को दबा सकती है उसके लिए अपने लक्ष्य को बदलना संभव हो सकता है ताकि उसे अपने पति के सही काम में और एक मसीही स्त्री और पत्नी के रूप में अपनी भूमिका में संतुष्टि मिले? अन्य शब्दों में वह अपनी अभिलाषाओं में जहां तक हो सकें; अच्छी मसीही पत्नी और मां होने के लिए नई दिशा दे सकती है।

(2) वह कुछ लक्ष्य को टाल सकती है। अपने पति की स्वीकृति से बनाने के लिए मसीही स्त्री के लिए यह आम बात है। बच्चे जब छोटे होते हैं तो मां दिन भर घबराती हैं जब वे बड़े हो जाते हैं तो वह अपनी रूचियों की ओर ध्यान देते हैं। अपने पिता के प्रोत्साहन से वह अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने की कोशिश कर सकते हैं।

(3) उसके लक्ष्य प्रमुख हो सकते हैं। कम से कम कुछ समय के लिए। एक तीसरी संभावना यह है कि पत्नी-पति के प्रोत्साहन से काम के अपने क्षेत्र को चुने। कई बार पत्नी का व्यवसाय परिवार की आय का मुख्य स्रोत होता है। पति किसी ऐसी जगह नौकरी कर रहा हो सकता है जहां वेतन कम हो, या वह घर में बच्चों की देखभाल का जिम्मा ले सकता है। ऐसा प्रबंध आवश्यक नहीं कि वचन का उल्लंघन हो।

बदलते लक्ष्यों की अनुमति दें

इस बात को समझें कि समय के साथ-साथ आपके लक्ष्य बदल सकते हैं। जीवन का एकमात्र न बदलने वाला सच यह है कि यह परिवर्तिनीय है। समय के साथ लोग बदल जाते हैं। परन्तु पति और पत्नी में नई दिलचस्पियां बनती हैं। इसके अलावा परिस्थितियां बदल जाती हैं। जिस नौकरी को करने की ट्रेनिंग उसने पाई थी हो सकता

है कि वह तकनीक के आ जाने से खत्म हो जाए। रोजगार के अदृश्य अवसर, आर्थिक तंगी, व्यक्तिगत समस्याएं, बच्चे हो जाना, बीमारी परिवार की समस्या इनमें से कोई भी बात दम्पत्ति के जीवन में हलचल पैदा कर सकती है।

बदलाव आने पर आप अपने लक्ष्यों का क्या कर सकते हैं? आपके लक्ष्य अनुकूल होने चाहिए। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के लिए एक नौकरी को छोड़कर किसी दूसरी तरह का काम आरंभ करना बड़ा ही आम है। आमतौर पर आदमी की उम्र और उसकी परिस्थितियों के बढ़ने से वह अधिक से अधिक धन कमाने की कोशिश में किसी ऐसे काम को करने पर ध्यान देने के लिए अपना काम बदल सकता है, जिससे दूसरों की सहायता कर सके। उदाहरण के लिए प्रचारक शिक्षक या कौंसलर के रूप में। स्पष्टता यह उत्पन्न होने पर परिवार के लक्ष्य बदल जाते हैं। मसीही दम्पत्ति के लिए किसी भी बड़े परिवर्तन का निर्णय लेना एक-दूसरे की संतुष्टि को ध्यान में रखकर होता है।

परिस्थितियों के साथ लक्ष्य बदल जाते हैं। इसलिए एक दम्पत्ति के रूप में आपको और आपके पति या पत्नी को निरन्तर अपने लक्ष्यों का पुनः मूल्यांकन करते रहना चाहिए। कोई दम्पत्ति विशेष प्रश्नों की चर्चा के लिए हर वर्ष योजना बना सकता है, "क्या हम अपने लक्ष्यों को पा रहे है।?" हमें अपने लक्ष्य कैसे बदलने चाहिए? किन लक्ष्यों को छोड़ देना चाहिए? किन नये लक्ष्यों को अपनाना चाहिए?

परमेश्वर की अगुआई में

लक्ष्य निर्धारित करने और निर्णय लेने के समय परमेश्वर का ध्यान रखें। दम्पत्ति के रूप में हर निर्णय में उसकी सेवा और उसे भाना आपकी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

1. लक्ष्य ठहराने पर विचार करते हुए उसके निर्देशन के लिए प्रार्थना करें, उसकी अगुआई मांगे। उसे बताएं कि आप वह करना चाहते हैं जो वह आपसे करवाना चाहता है। फिलिप्पियों 4:6 कहता है, किसी भी बात की चिंता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।

2. अपने लक्ष्यों को पाने में उसकी सहायता पर योजना बनाएं। परमेश्वर के लिए और कलीसिया की बढ़ौतरी के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाएं। यह मानते हुए कि परमेश्वर आपकी कल्पना से कहीं अधिक कर सकता है, उससे अधिक पाने की कोशिश करें, जो आपको लगता है कि आप पा सकते हैं। फिलिप्पियों 4:13 (जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं) और इफिसियों 3:20 (परमेश्वर) ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है) जैसी आयतों को ध्यान में रखें।

(3) उपाय के लिए उसकी अगुआई को मानने को तैयार रहें। मसीही लोगों का मानना है कि परमेश्वर अपने संसार में सक्रिय है। जब आप अपनी योजनाओं के संबंध में प्रार्थना करते हैं, तो हो सकता है कि वह कुछ दरवाजों को बंद करके जबकि दूसरे दरवाजे खोल दे। यह जानना तो असंभव है कि परमेश्वर अपने उपाय के अनुसार आपके जीवन में क्या कर रहा है, पर आपको उन खुले हुए दरवाजों और बंद दरवाजों का यह समझने में सहायता के लिए परमेश्वर का तरीका मानना चाहिए कि वह क्या करें।

उदाहरण के लिए मसीही दम्पत्ति को यह पता होना चाहिए कि अपने लक्ष्यों को पूरा

करने की कोशिश करते हुए उन्हें आज्ञात निराशाएं और यहां तक कि कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ सकता है। परन्तु परमेश्वर कठिन समयों में अपने उपाय के अनुसार अपने लोगाें की अगुआई करता है। आपके जीवन में कुछ भी हो जाए, आप पक्का मान सकते हैं कि आपके साथ जो कुछ भी होता है परमेश्वर उसमें से भलाई निकाल सकता है और निकाल देगा (रोमियों 8:28)।

सारांश: विवाह होने पर आप और आपका साथी जीवन के बहाव में बहने या किसी उद्देश्य के लिए जीने का चयन कर सकते हैं। कई बार परमेश्वर के अनुग्रह से भविष्य के लिए योजना न बनाने वाले लोगों को अद्‌भुत आशिषें मिल जााती हैं, पर आपको ऐसा होने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने विवाह में आप दोनों को छोटी अवधि और लम्बी अवधि के एक-दूसरे को संतुष्ट करने वाली लक्ष्य अपनाने की योजना अपनानी चाहिए। जिसमें दोनों को संतुष्टि मिले और परमेश्वर को महिमा ऐसा करने से।

आत्मा यीशु की महिमा कैसे करता है

(यूहन्ना 16)

ऍंडी क्लोर

"वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा, जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।" (आयतें 14:15)

अपने प्रेरितों के साथ अटारी वाले कमरे में हुई बातचीत में यीशु ने अपने चले जाने के थोड़ी देर बाद अपने प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा दी। यूहना 16 इस बात का संकेत देता है कि उनके साथ आत्मा की उपस्थिति तीन मुख्य कामों को पूरा करने के लिए है। पहला उसने संसार को यीशु की सेवकाई और जीवन के विषय में निरुतर करना था (आयतें 8-11)। दूसरा उसने प्रेरितों द्वारा विश्व में सुसमाचार ले जाने के लिए आवश्यक अगुआई देनी थी (आयत 13)। तीसरा, उसने यीशु की महिमा करनी थी (आयतें 14, 15)।

"महिमा" शब्द का अर्थ यीशु की स्वाभाविक भलाई, ईश्वरीयता और उद्धार दिलाने वाले स्वभाव को दिखाना है। आत्मा के इस प्रकाशन से परोक्ष रूप में मसीह की प्रशंसा तारीफ और महिमा होनी थी। आत्मा को अपनी महिमा कराने के लिए नहीं भेजा जा रहा था बल्कि प्रेरितों और संसार का ध्यान मसीह और उस उद्धार की ओर ले जाने के लिए भेजा जा रहा था जिसे वह संसार में ला रहा था।

चर्चा के इस भाग में (आयतें 14, 15) यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि आत्मा ने उसकी महिमा कैसे की थी।

उसका जोर

यीशु ने यह कहते हुए आरंभ किया कि आत्मा अपने प्रकाशन के जोर के द्वारा उसकी महिमा करेगा। यीशु ने कहा, "क्योंकि वह मेरी बातों से लेकर तुम्हें बताएगा।" जो कुछ मसीह ने किया था अर्थात उसकी शिक्षा, सेवकाई, मृत्यु और

पुनरुत्थान को लेकर आत्मा ने मसीह के द्वारा उपलब्ध करवाए गए उद्धार को और इनकी व्याख्या को लागू करके इन सबके महत्व को बताना था।

यीशु के चेलों को बाद में "मसीही कहलाना था" (देखें प्रेरितों 11:26)। परमेश्वर ने मसीह को संसार में अपनी सनातन मंशा में अगुआई के लिए भेजा। यीशु ने आकर मरने तक पिता की आज्ञा का पालन किया। इस कारण उसे अति ऊंचा किया और मसीह युग का "प्रभु" बना दिया गया। पौलुस ने लिखा,

इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वो नाम दिया जो सब नामों से श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जो भी अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 1:9-11)।

अपनी प्रेरणा के द्वारा पवित्र आत्मा ने उस सबके अनन्त महत्व की घोषणा करनी थी जो यीशु ने किया। आत्मा का ओर यीशु के सदा तक रहने वाले काम पर होना था।

उसकी व्याख्या

इसके अलावा यीशु ने कहा कि आत्मा उस सब की व्याख्याएं देकर जो उसने किया था उसकी महिमा करेगा। यीशु "क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा" (16:14)। यीशु के चले जाने के समय तक भी प्रेरितों को पक्का पता नहीं था कि उसका मिशन और राज्य कैसा होगा। उन्हें उनका पता तो था और उन्होंने यीशु से उसकी बातें सुनीं थी, पर उसकी योजनाओं की उसकी समझ बिल्कुल खाली थी जिसे आत्मा ही उभारकर सुधार सकता था। शायद उसके ऊपर उठाए जाने के गवाह बनने के मार्ग तक भी वे अभी तक पूछ रहे थे कि उसका राज्य कैसा होगा (प्रेरितों 1:7, 8)। उन्हें प्रकाशन देकर और वे बातें याद दिलाकर जो यीशु ने उनसे कहीं थी, आत्मा ने इन मामलों में उन्हें गहरी समझ बतानी थी। बताना शब्द यूनानी भाषा के शब्द से निकलता है जिसमें विवरण की घोषणा करने का सूक्ष्म भेद है।

पवित्र आत्मा ने सब सत्य का मार्ग बताने और उन्हें वे बातें याद दिलाने के लिए जो पहले उन्होंने सुनी थी उसका सहायक (14:26) बनाना था। उसने मसीह की सेवकाई का वह मुख्य स्थान देना था जो प्रेरितों के जीवनों और परमेश्वर की व्याख्या में होना चाहिए था।

उसका ऊंचा उठाया जाना

आत्मा ने यीशु को ऊंचा उठाकर उसकी महिमा करनी थी। यीशु ने प्रेरितों को ध्यान दिलाया जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिए मैंने कहा, कि वह मेरीबातों में से लेकर तुम्हें बताएगा (16:15)। एक अर्थ में अपनी योजना का केन्द्र बनकर यीशु को पिता को पूर्ण इच्छा को लागू करने के लिए भेजा गया था। यीशु में परमेश्वर की सारी भरपूरी वास कर रही थी (इफिसियों 3:19)। उसमें लोगों को परिपूर्ण किया जा सकता था। उसने सारे अधिकार और शासन पर स्थिर होना था (कुलुस्सियों 2:10)। यीशु पृथ्वी पर पूरे परमेश्वरत्व के प्रति सम्पूर्ण और पूर्णता के रूप में आया, क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता संदेह वास करती है। (कुलुस्सियों 2:9)।

यीशु ने वही सिखाया और किया था जो उसे पिता ने बताया था। जिन्होंने यीशु

को निकट से और समझदारी से देखा था उन्होंने पिता को देख लिया था (यूहन्ना 14:9) और वे यह समझ पाए थे कि अपनी सेवकाई में यीशु जो कुछ कर रहा था उसे भेजने के पिता का ईश्वरीय कारण था। एक शारीरिक देह को धारण करने से यीशु मानवीय स्थिति में आने और अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के योग्य हुआ (इब्रानियों 10:7)।

पिता के रूप में परमेश्वर

ह्युगो ई. प्रीस्ट

परमेश्वर हमारे लिए या तो दयालु पिता होगा या भस्म करने वाली आग

इस परिवर्तनशील संसार में एक अपरिवर्तनीय परमेश्वर के बारे में कोई कैसे जान सकता है? कई प्रकार से, आधुनिक विकास ने हमारी समझ पर पर्दा ही डाला है।

कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों की तरह, हमारे समय के नारी आंदोलन ने बहुत से अन्यायों को समापत करने में सहायता देने के साथ-साथ कई बुराईयों को भी जन्म दिया है। बाइबल अध्ययन के क्षेत्र में, नारी आंदोलन उद्धार की थियोलोजी से मिल चुका है जिससे बाइबल के कुछ आश्चर्यजनक तथा अचंभित करने वाले अनुवाद हुए हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी एनआरएसवी अनुवाद कुछ अधिक सतर्क होकर किया गया है। यह तो स्पष्ट है कि इसके अनुवादकों ने बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में माना; परन्तु उन्होंने बार-बार यूनानी शब्द का अनुवाद भाइयों और बहनों किया है जबकि इसका अर्थ भाइयो है। जहां पर सामान्य शब्द में बहनों शब्द शामिल है वहां पर कोई हैरान हो सकता है कि इन अनुवादकों ने पवित्र शास्त्र में भाइयों और बहनों शब्द क्यों डाला जबकि एक टिप्पणी में यह भी कह दिया कि यूनानी शास्त्र में इसका अर्थ भाइयो है। क्या अनुवाद में वही बात नहीं होनी चाहिए जो मूल शास्त्र में कही गई है और पादटिप्पणियों में केवल उसका भावानुवाद या व्याख्या ही हो? मुझे लगता है कि अनुवादक बाइबल अध्ययन के समय की जलवायु तक पहुंच गए हैं और एक उत्कृष्ट कार्य पर उन्होंने दाग लगा दिया है।

ये टिप्पणियां पाठक को इस तथ्य से सचेत करने के लिए की गई है कि लिंग परमेश्वर के पिता होने की किसी भी चर्चा में एक विषय बन चुका है। बीते समयों में ऐसी कोई समस्या नहीं थी। अब जबकि उदारवादी धर्म शास्त्रियों तथा नारी आंदोलन द्वारा परमेश्वर के लिए पिता और अन्य लिंग संबंधी शब्दों के विलक्षण उपयोग का विरोध किया जाता है, तो इस मुद्दे की जांच करनी ही सही है।

इन बातों को मन में रखकर, हम पिता के रूप में परमेश्वर को देखेंगे कि उसके बच्चों में से प्रत्येक के लिए उससे संबंध बनाए रखना कितना आवश्यक है।

हे प्रभु यीशु, आ

जॉन स्टेसी

शैतान ने पाप के द्वारा लोगों में ऐसा विश्वास पैदा कर दिया है कि जीवन ऐसे ही हमेशा चलता रहेगा। लोग इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं देना चाहते कि बाइबल कहती है कि मसीह फिर वापस आएगा। यीशु ने मत्ती 24:36 में स्वयं कहा था, कि उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। और फिर उसने कहा था इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा। (मत्ती 24:44)। ऐसे ही मत्ती 25:13 में यीशु ने यूं कहा था कि इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो और न उस घड़ी को। आरंभ में मसीह की कलीसिया के लोग यीशु के दोबारा आने की प्रतीक्षा करते थे। बाइबल में उनके बारे में पढ़कर हम इस बात को स्पष्ट रूप में देखते हैं कि मसीह के दोबारा आने के प्रति उनका व्यवाहर बड़ा ही आशावादी था। ऐसा ही व्यवहार आज हजारा भी होना चाहिए। इस विषय में हमें हमेशा बड़ा ही सचेत रहना चाहिए कि यीशु कभी भी वापस आ सकता है। आरंभ में मसीही लोगों के बारे में हम इस प्रकार देखते हैं :

सबसे पहले वे लोग मसीह के वापस आने की बाट जोह रहे थे।

पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 5:2 में कहा था, कि जैसे रात को चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन भी आने वाला है। इसी अध्याय के छठे पद में उसने कहा था कि इसलिये हम औरों की तरह सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें। पौलुस ने ही तीतुस को लिखकर इस प्रकार कहा था और उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की बाट जोहते रहे। (तीतुस 2:13)। क्या आप मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं?

दूसरी बात उन आरंभ के मसीही लोगों में हम यह पाते हैं कि उनकी बड़ी ही इच्छा थी कि मसीह वापस आ जाए। 1 कुरिन्थियों 16:22 में हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने कहा था कि हमारा प्रभु आने वाला है। प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 22:20 में कहा था कि हे प्रभु यीशु आ। क्या हम भी यह इच्छा रखते हैं कि प्रभु यीशु जल्दी वापस आ जाए। क्या हम उसके दोबारा आने के लिये प्रार्थना करते हैं? यदि आप को पता चल जाए कि मसीह आज ही वापस आने वाला है, तो क्या आप अपने जीवन में कुछ परिवर्तन करना चाहेंगे? उसके दोबारा आने के संबंध में लोगों के बीच दो प्रकार के व्यवहार होंगे। प्रकाशितवाक्य 17 में हम यूं पढ़ते हैं देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हां, आमीन। किन्तु, यीशु के दोबारा आने के विषय में पौलुस ने थिस्सलुनिकियों के नाम अपनी पत्री में लिखकर कहा था, सो इन बातों से एक-दूसरे को शांति दिया करो। (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)। मसीह के दोबारा आने पर आप की क्या प्रतिक्रिया होगी?